साईमय हुआ ग्वालियर

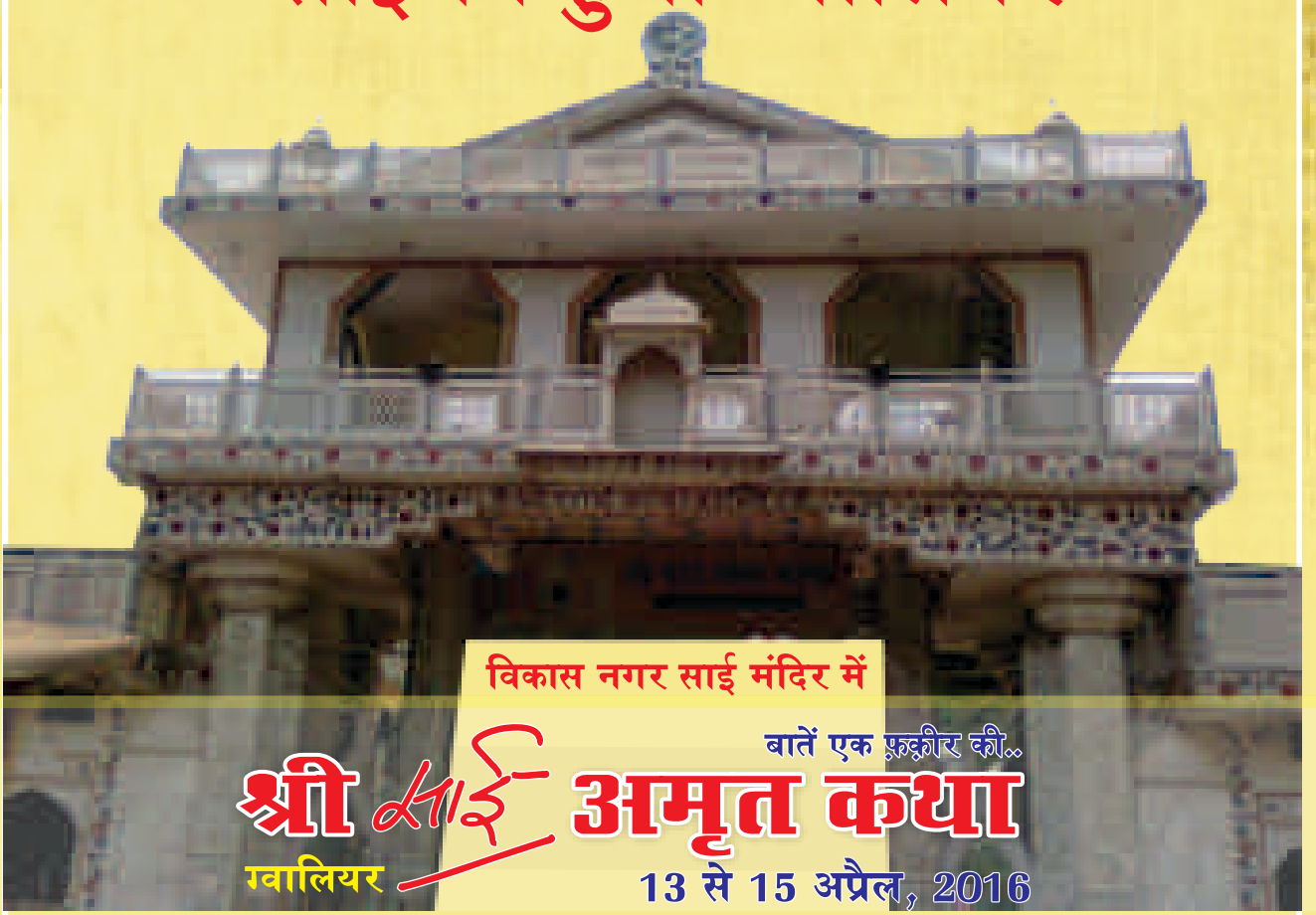

विकास नगर साई मंदिर में

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

ग्वालियर

13 से 15 अप्रैल, 2016

पहला दिन: साई को मानो, साई को जानो, साई की मानो

ग्वालियर में तीन दिवसीय श्री साई अमृतकथा की शुरूआत श्री साई मंदिर, विकास नगर, ग्वालियर के प्रांगण में 13 अप्रैल 2016 को हुई।

कथा परिसर में श्री साई अमृतकथा के माध्यम श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' के आगमन पर बाबा के चमत्कारी जीवन पर आधारित श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ की पूजा की गई, तथा ग्रंथ को कथा पीठ पर स्थापित किया गया। साई बाबा ने लोगों को सत्य और शांति के मार्ग पर चलना सिखाया है। श्री साई सच्चरित्र में उल्लेख मिलता है कि सारे धर्म ईश्वर तक पहुँचने का जरिया है। बाबा ने हमें सभी धर्मों के सम्मान की शिक्षा दी है। यह बात विकास नगर, ग्वालियर स्थित साई मंदिर में तीन दिवसीय श्री साई अमृतकथा के प्रथम दिवस पर श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' ने कही।

ऊंकार के नाद के साथ 'भाईजी' ने मंगलाचरण की शुरूआत की। प्रथम पूज्य श्री गणेश, माँ सरस्वती सभी देवाधिदेव, संतजनों, गुरूजनों, परिजनों को वंदन, नमन एवं श्री साईनाथ के जयकारों के साथ श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' ने उपस्थित साई भक्तों को साईनाथ नाम जाप की महिमा बताते हुए यह भजन गाया –

जप ले साई का नाम..

'भाईजी' ने श्री साई अमृतकथा का परिचय, बाबा के स्वरूप एवं विभिन्न चमत्कारी लीलाओं पर प्रकाश डाला। 'भाईजी' ने ग्वालियर की बात करते हुए बताया कि ग्वालियर शहर का नामकरण किस तरह हुआ। संत् ग्वालिपा को उध्दृत करते हुए 'भाईजी' ने ग्वालियर की बात की एवं ग्वालियर का उल्लेख भी श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ में आया है ऐसा साई भक्तों को बताया। 'भाईजी' ने साई बाबा मंदिर, ग्वालियर की स्थापना एवं उसके स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए, साई बाबा के जयकारे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म श्री सच्चिदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की विस्तृत व्याख्या, बाबा के ग्रंथ में श्री साई सच्चरित्र में उल्लेखित विभिन्न उद्धरणों के द्वारा की गई।

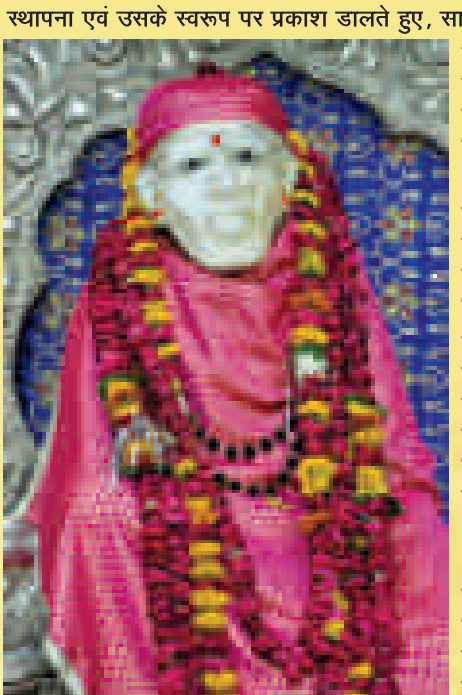

मंदिर में बाबा की मनोहारी मूर्ति

भजन 'तेरा अन्त न पाया' के द्वारा बाबा की अनन्त महिमा की व्याख्या 'भाईजी' ने अपनी सुमधुर वाणी में की। बाबा सभी की रक्षा करें, ऐसी कामना करते हुए 'भाईजी' ने 'साई मेरी रक्षा करना' भजन द्वारा बाबा के नायक स्वरूप की विस्तृत व्याख्या की।

बाबा के योगी रूप की व्याख्या करते हुए 'भाईजी' ने बाबा के विभिन्न चमत्कारों से एवं छोटी–छोटी बातों से जो सीख अपने भक्तों को दी, उसकी विस्तृत विवेचना की। अपनी दृष्टि में दोष न रहे, वाणी की मधुरता बनाये रखें। रिश्तों पर विशेष ध्यान दिये जाने की बात करते हुए बताया–मन की तरंग साध लो, लो हो गया भजन.

'भाईजी' ने समाज में फैली महिलाओं के प्रति तुष्टिकरण की नीति पर ध्यान आकर्षित करते हुए नाना साहेब चांदोरकर एवं मुस्लिम महिलाओं का एक किस्सा सुनाया। 'भाईजी' ने वाणी पर संयम कैसे रखें, इस बारे में बाबा की सीख पर विस्तृत रूप से चर्चा की।

साई बाबा द्वारा कुश्ती में मोईनुद्दीन से हार जाने के बाद भी बाबा के जीवन की दिशा कैसे बदली एवं

विकास नगर साई मंदिर में

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

ग्वालियर

13 से 15 अप्रैल, 2016

जीवन में हार कर भी जीता जा सकता है, यह बात 'भाईजी' ने श्री साई अमृतकथा के दौरान बतायी। 'भाईजी' ने साई सच्चरित्र में उल्लेखित हाजी सिद्दिक फालके के किस्से से बताया कि प्रभु प्राप्ति या बाबा की प्राप्ति में किसी भी प्रकार का अहंकार आड़े आता है।

'भाईजी' ने श्री साई बाबा के परब्रह्म स्वरूप की व्याख्या करते हुए भजन के माध्यम से भक्तों को बताया की साई बाबा सच्चिदानंद स्वरूप में हम सभी भक्तों के साथ है एवं साई शरण को प्रभु प्राप्ति का मार्ग बताया।

श्री साई अमृतकथा के दौरान 'भाईजी' ने बताया कि साई तो मन में बसते है। हम उन्हें देवालयों में ढूँढ़ते है। हम यह भूल जाते है कि हमारा मन ही साई का मंदिर है फिर चाहे हम किसी भी धर्म समुदाय या मजहब को मानते हो। जैसे कि हमें सिखाया जाता है कि मंदिर या देवालय में प्रवेश करने के पहले अपने जूते चप्पल बाहर उतार कर ही अंदर प्रवेश करें, क्योंकि जूते चप्पलों में लगी धूल–मिट्टी से मंदिर या देवालय अपवित्र हो जायेगा। ठीक वैसे ही हम यह नहीं सोचते की जब हम अभिमान, दंभ, धमण्ड एवं ईर्ष्या के जूते अपने मन में पहनकर मंदिर में प्रवेश कर जाते है तो हम उसे अशुद्ध, अपवित्र कर देते है, इसलिए यह जरूरी है कि हमें तन की स्वच्छता के साथ–साथ मन की स्वच्छता का ध्यान भी रखना चाहिए।

'बस एक बार आजा साईनाथ की शरण में' भजन के साथ 'भाईजी' ने प्रथम दिवस की कथा को विराम दिया।

साई को मानने वाले श्रद्धालु साई को जानते हुए कि वो साई की मान सकें।

दूसरा दिन: साई का प्राकट्य सिर्फ़ कथा में नहीं जीवन में भी

कथा के द्वितीय दिवस पर श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' ने ऊँकार के साथ मंगलाचरण की शुरूआत की तथा श्री गणेश, माँ सरस्वती, संतजनों, गुरूजनों, परिजनों के वन्दन एवं साईनाथ के जयकारे के साथ कथा प्रारंभ की ''सुबह दोपहरी हो या शाम, कर ले वन्दे यह शुभ काम'' भजन द्वारा साई बाबा के नाम जाप की महिमा को 'भाईजी' ने उध्दृत किया। समुद्र मंथन की व्याख्या करते हुए 'भाईजी' ने बताया कि समुद्र मंथन से जैसे रत्न, कामधेनु, कल्पवृक्ष, अमृत की प्राप्ति हुई थी उसी तरह आज की कथा में श्री साई बाबा का प्राकट्य होगा।

'भाईजी' ने बताया कि जब–जब दु:खी इन्सान ने दिल से ईश्वर को नाम लेकर पुकार लगाई है तब–तब ईश्वर ने सदा ही अपने भक्तों के दु:ख, निवारण के लिए अपना निर्विकार स्वरूप छोड़कर अवतार के रूप में साकार हुए हैं। जब भी हम सत्य एवं धर्म के मार्ग को तज कर जीवन की रंगीनियों में भटकने लगते है तब हमें सद्मार्ग पर लाने के लिए अपने परमपिता से मिलवाने के लिए ईश्वर संत रूप में अवतरित होकर हमारा हाथ थामने आ जाते है।

बाबा का आगमन शिरडी में जब हुआ तब उन्हें कोई नहीं जानता था। उनका कोई नाम नहीं था वे बिना नाम के संत के रूप में शिरडी आये थे। साई बाबा नीम के वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे। उन्हें सबसे पहले नाना चौपदार की माता जी ने देखा था।

विकास नगर साई मंदिर में

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

ग्वालियर

13 से 15 अप्रैल, 2016

श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' के गाये भजन– एक फ़क़ीर आया, शिरडी गाँव में, आ बैठा वो नीम की ठण्डी छाँव में। पर भक्तगण झूम उठे और बाबा का प्राकट्य हुआ।

यह बिना नाम का संत कुछ समय शिरडी में रहकर बिना किसी को बताये शिरडी से गायब हो गया एवं बाद में बिना नाम का यही संत चाँद पाटिल को उसकी खोई हुई घोड़ी से मिलाने का माध्यम बना। बाद में यही नवयुवक चाँद पाटिल की पत्नि के भतीजे की बारात के साथ वापिस शिरडी आया एवं यहीं का होकर रह गया। इस दौरान श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' ने मैं चिलम हूँ मिट्टी की भजन गाया तो भक्तगण भाव विभोर हो गये।

यह नवयुवक बारात के साथ जब शिरडी वापिस आया तो म्हाल्सापति ने आओ साई कहकर उन्हें पुकारा। यही 'साई' नाम का नामकरण म्हाल्सापति ने उस नवयुवक का किया। इस नवयुवक ने एक टूटी–फूटी मस्जिद को अपना ठिकाना बनाया एवं यहीं पर रहने लगा। बायजामाई को भी उनका खोया बेटा मिल गया, बायजामाई ने उसे प्यार दुलार दिया।

''कौन कहता है साईनाथ आते नहीं'' ग्वालियर वालों की तरह तुम बुलाते नहीं भजन पर साई भक्तों ने साईबाबा को पुनः पा लिया।

श्री साई अमृतकथा के दौरान 'भाईजी' ने साई बाबा की दिनचर्या, उनका प्रातःकाल उठना, लैंडीबाग की सैर पर जाना आदि का जब वृतांत सुनाया तो मानों ऐसा लगा जैसे सभी भक्त अपने आपको शिरडी में ही पा रहे हों। बाबा की भिक्षाटन की प्रवृति पर विशेष रूप से 'भाईजी' बताया कि बाबा सिर्फ पाँच घरों में ही भिक्षाटन के लिए जाते थे। भिक्षा मांगने की इस शैली को 'भाईजी' ने ''भिक्षा दे दे माई'' भजन द्वारा सजीव कर दिया। 'भाईजी' ने बाबा द्वारा पानी से दिये जलाने के वृतांत को श्री साई अमृतकथा के दौरान बताया कि कैसे बाबा सभी का जीवन सुधार देते है एवं बिना किसी बैर भाव या राग द्वेष के बाबा सुधार के रास्ते पर लाते है एवं नये जीवन का मार्ग प्रशस्त करते है।

'भाईजी' द्वारा गाये साई नाम दिये जैसा है भजन पर मानों सारा कथा मंडप प्रकाश–पुंज से जगमगा उठा। बाबा न केवल अपने भक्तों के दुःख दूर करते थे वरन् भक्तों के रोगों की चिकित्सा भी किसी नामचीन वैद्य की तरह देशी दवाईयों से करते थे। 'भाईजी' ने धूनी की राख जिसे उदी कहते हैं, की महिमा बताते हुए कहा– जैसे हमारा शरीर अग्नि को समर्पित होकर राख में तब्दील हो जाता है वैसे ही उदी की तरह हमें भी जीवन पर्यन्त दूसरों के काम आना चाहिए एवं राख रूप में भी उदी की तरह ही लोकोपयोगी होना चाहिए। बाबा की चमत्कारी उदी की महिमा का वर्णन करते हुए 'भाईजी' ने बताया– बाबा की चमत्कारी उदी बाबा के जीवित रहते भक्तों के दुःख तकलीफ का निवारण तो करती ही थी और आज भी बाबा के समाधिस्थ होने के बाद भी भक्तों के दुःखों एवं तकलीफों का निवारण कर रही है।

'रमते राम आओ जी उदिया की गुनिया लाओं जी' भजन पर साई भक्त झूम उठे।

'भाईजी' ने साई बाबा की दैनिक क्रियाओं में बाबा की एक सीख की ओर इंगित करते हुए बताया कि बाबा पर्यावरण के प्रति अपने भक्तों को हमेशा सजग एवं आगाह करते रहते थे। बाबा को भिक्षाटन से जो भी राशि या अन्य सामग्री मिलती थी, बाबा उसे अपने भक्तों में बांट देते थे एवं शाम तक बाबा के पास कुछ भी शेष नहीं रहता था। 'भाईजी' ने बाबा के पहले अभिलेखित चमत्कार के बारे में बताया कि बाबा की अनुकम्पा से काका साहेब डेंगले को संतति –प्राप्ति का सुख प्राप्त हुआ तो इस सुखद अनुभूति के अवसर पर काका साहेब डेंगले ने बाबा को एक हथेली चौड़ा और तीन हाथ लंबा लड़की का एक तख्ता भेंट स्वरूप प्रदान किया जिस के चारों कोनों पर दीपक लगा कर पुरानी चिंदियों से लटकाकर बाबा इसी तख्ते पर रात्रि में विश्राम करते थे इसे बाबा की एक योगिक क्रिया मानी जाती है।

साई बाबा को लेकर हो रहे विवाद पर 'भाईजी' ने बताया–''साई बाबा विवाद का नहीं विश्वास का विषय हैं''। साई बाबा ने जीवन पर्यन्त अपने आपको कभी भगवान नहीं कहा और ना ही भगवान कहलवाया। साई बाबा तो हम सबके मन में बसते हैं और जब–जब उनके नाम का सुमिरन करोगे, साई बाबा को अपने पास पाओगे। द्वितीय दिवस पर कथा को विश्राम की ओर ले जाते हुए 'भाईजी' ने साई बाबा के छह गुणों का विस्तार से वर्णन करते हुए बताया जो भगवान होने के लक्षण माने जाते हैं इन सभी छह गुणों के कारण बाबा को भगवान होने या माने जाने का वर्णन 'भाईजी' के श्रीमुख से हुआ। यश, कीर्ति, श्री, ज्ञान, वैराग्य और पराक्रम या वीर्य कैसे यह छह गुण बाबा में परिलक्षित होते है जिन गुणों के कारण साई भक्त बाबा को भगवान स्वरूप में देखते है। तुम तो हो साई, मैं तो हूँ चाकर भजन के साथ 'भाईजी' ने द्वितीय दिवस पर कथा को विराम दिया।

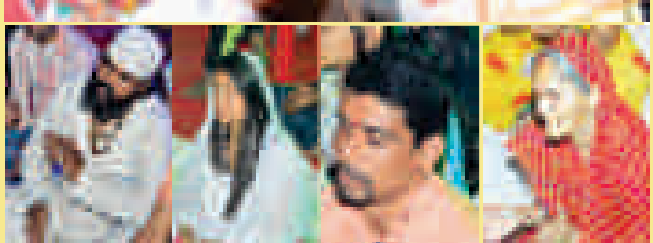

कथा करवाने हेतु संपर्क: 09200009112, 09200009114, 09200036111 08989099789 facebook.com/saiamritkatha
info@saiamritkatha.com shree sai amrit katha saiamrit.blogspot.in www.saiamritkatha.com

विकास नगर साई मंदिर में

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

ग्वालियर

13 से 15 अप्रैल, 2016

तीसरा दिन: साई से मत मांगो, साई को मांगो

कथा के तृतीय दिवस की शुरूआत ऊंकार नाद तथा मंगलाचरण के साथ भोपाल से पधारे परम साई भक्त श्री सुमीत पोन्दा 'भाईजी' ने की। प्रथम पूज्य श्री गणेश देवाधिदेव, संतजनों, गुरूजनों एवं परिजनों को वंदन, नमन एवं साई नाथ के जयकारों के साथ तृतीय दिवस की कथा प्रारंभ की। बाबा के जीवन एवं उनके चमत्कारों पर आधारित ''श्री साई सच्चरित्र'' ग्रंथ जो साई भक्तों के लिए रामायण, गीता के समान ही स्मरणीय एवं पठनीय तथा पूजनीय है के लेखन के लिए जब बाबा से दाभोलकर जी ने पूछा तो बाबा ने दाभोलकर जी से श्री साई सच्चरित्र की रचना के बारे में क्या कहा इस बारे में 'भाईजी' ने साई भक्तों को सविस्तार बताया। पहले तो श्री पोन्दा 'भाईजी' ने श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ के रचयिता श्री गोविन्द रघुनाथ दाभोलकर जी के चरित्र को समझाया एवं कैसे अंहकार से ग्रसित होकर वे प्रारंभिक दिनों में गुरू की महत्ता को नकारते रहे। 'भाईजी' ने कथा के दौरान गुरू के अस्तित्व में उनकी आस्था जगाई और उन्हें बाद में हेमाडपंत की उपाधि से नवाजा तथा अपनी शरण में लिया। साई अमृत कथा के दौरान 'भाईजी' ने बताया कि बाबा ने चक्की से गेहूँ पीसकर उसके चूर्ण को शिरडी के चारों तरफ फैलाकर शिरडी को प्लेग जैसी महामारी से बचा लिया। इन सभी चमत्कारों को देखकर दाभोलकर जी के मन में इस चमत्कारी संत की जीवनी लिखने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। 'भाईजी' ने बताया कि शामा की मदद से बाबा की अनुमति उन्हें इस शर्त पर मिली की इसके लिए दाभोलकर जी को अपना अहंकार छोड़ना पड़ेगा और अपनी जीवनी बाबा स्वयं दाभोलकर जी के माध्यम से लिखेंगे। दाभोलकर जी पर बाबा की असीम कृपा के चलते श्री साई सच्चरित्र की रचना हुई। 'भाईजी' ने कथा के दौरान शिरडी में होने वाले चावड़ी महोत्सव एवं बाबा की पालकी यात्रा का विस्तारपूर्वक वृतांत सुनाया उस दौरान 'भाईजी' द्वारा गाये भजन – ले के चलो पालकी शिरडी के नाथ की पर भक्तगण बाबा की पालकी अपनी कांधों पर उठा–उठाकर बाबा की याद में झूमने लगे और 'भाईजी' द्वारा गाये भजन पर थिरकने लगे।

'भाईजी' ने कथा के दौरान बताया कि बाबा जब सशरीर थे तब भी बाबा के चमत्कार होते थे। अब जब बाबा हमारे बीच नहीं है, फिर भी बाबा की समाधि से हर दिन इतने चमत्कार होते हैं कि उन पर प्रतिदिन एक ऐसे ग्रंथ की रचना की जा सकती है।

कथा को विराम की ओर ले जाते हुए 'भाईजी' ने बाबा की समाधि की छोटी–छोटी घटनाओं का जब विवरण किया तो उपस्थित साई भक्तों को यह अहसास होने लगा कि जैसे वे स्वयं ही इस समय शिरडी में मौजूद हों। इस अवसर बाबा के भक्त साई भक्ति में लीन हो गये और अश्रुधारा बहने लगी और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे उस ऐतिहासिक घटना के साक्षी है।

बाबा ने अपना शरीर त्याग कर बायजामाई के बेटे तात्या की जान बचाई। 'भाईजी' ने यह बताया कि बाबा ने कहा था कि मेरे यह देह त्याग के बाद मेरी समाधि भक्तों में अभयत्व लायेगी एवं भक्तों की रक्षा करेगी। आँखें सूनी मन रोता है भजन पर भक्तों की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

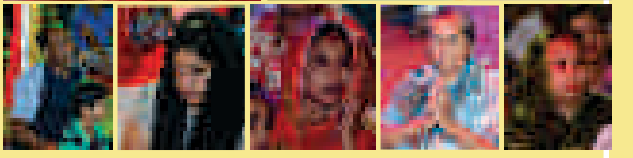

भाईजी' ने बाबा के ग्यारह वचनों का गायन भी किया और कहा कि साई तो हमारे मन में बसते हैं। बस उन्हें जागृत करने की जरूरत हैं। साई भक्तों के भाव में बसते है। साई बाबा को पाने के लिए कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। हम अपने जीवन पर्यन्त भी साई की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारते रहे और उन्हें निभाते रहे तो हम निश्चित ही साई को पा लेंगे। साई हम में अभयत्व का संचार करते हैं। यही इस साई अमृत कथा का उद्देश्य, सार एवं सत्य है, यही अमृत है, यदि जीवन में कोई भय न हो अभयत्व हो तो हमारा जीवन सांई की कान्ति से दमकता रहता है। 'भाईजी' ने कहा कि यह कथा कोई उपदेश नहीं बल्कि उपचार है, हमारी कमजोरियों का। यह कथा कोई प्रवचन नहीं बल्कि बाबा के वचनों एवं चमत्कारों का बखान है। साई तेरे संग से जीवन सँवर गया भजन से भाई जी कथा को विराम की ओर ले गये।

'भाईजी' ने बताया कि **''बाबा भली कर रहे..''** इस वाक्य के बारम्बार स्मरण करते रहने से जीवन में साई का उदय होता है और हमारा मन जन्म–जन्मान्तरों के भय से मुक्ति पा जाता है। इन्हीं उद्गारों के साथ 'भाईजी' ने कथा को विराम दिया।